भारत के नियंत्रक -महालेखापरीक्षक
का
महाकुंभ मेला - 2013, इलाहाबाद पर निष्पादन लेखापरीक्षा प्रतिवेदन

रिपोर्ट 01.07.2014 को राज्य सदन के पटल पर रखी गई है

31 मार्च 2013 को समाप्त हुए वर्ष के लिए

उत्तर प्रदेश सरकार
प्रतिवेदन संख्या : 3 (वर्ष 2014)

कुम्भ पर्व की उत्पत्ति

कलशस्य मुखे विष्णु कण्ठे रुद्र समाश्रितः।
मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्त द्वीपा वसुन्धरा
ऋग्वेदो यजुर्वेदो सामवेदोह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सरिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।

Kalashasya mukhe vishnu kanthe rudra samaashritah
Muletvasya sthito brahmaa madhye maatriganaah smritaah
Kukshau tu saagaraah sarve sapta dvipaa vasundharaa
Hrigvedo yajurvedo saamavedohrytharvanah
Angaishca saritaah sarve kalasham tu samaashritaah

संस्कृत का यह श्लोक हमें बताता है कि देवों में त्रिदेव– सृष्टि के रचयिता ब्रम्हा, पालक विष्णु एवं विनाशक शिव–समस्त देवियों के साथ, माँ वसुन्धरा अपने सात द्वीपों के साथ तथा ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के रूप में समस्त ज्ञान कुम्भ में समाये हैं। इस प्रकार कुम्भ, जो भी था और जो भी आज विद्यमान है, उसका प्रतीक है। कुम्भ मेला एक उत्सव है, कुम्भ के वैभव का त्योहार है। यह समस्त ज्ञान एवं समस्त जीवन का एक पर्व है। अतः जनता के विश्वास एवं हमारे ऋषि–मुनियों के चिन्तन के परिणाम स्वरूप इस पवित्र पर्व का नाम "कुम्भ मेला" पड़ा।

विषय सूची

विषय		पृष्ठ संख्या	
		से	तक
प्राक्कथन		iii	iii
प्रस्तावना		v	vi
कार्यकारी सार		vii	x
अध्याय 1	लेखापरीक्षा संरचना	1	3
अध्याय 2	नियोजन	5	9
अध्याय 3	वित्तीय प्रबन्धन	11	14
अध्याय 4	महाकुम्भ मेला हेतु अवसंरचना व्यवस्था	15	34
अध्याय 5	भीड़ प्रबन्धन	35	50
अध्याय 6	पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी	51	57
अध्याय 7	अन्य महत्वपूर्ण बिन्दु	59	63
अध्याय 8	गुणवत्ता आश्वासन	65	68
अध्याय 9	अनुश्रवण एवं मूल्यांकन	69	71
अध्याय 10	निष्कर्ष	73	74
	परिशिष्ट	75	100